विष्णुपुर की मृण्मयी धरोहर

Kirti, Dr. Ashish Garg

Shri Ram College
Muzaffarnagar

जोरबांग्ला मंदिर:- 17वीं सदी में, राजा रघुनाथ सिंह देव द्वितीय द्वारा निर्मित है। बानगी की पारम्परिक चाल वास्तुशैली में निर्मित अपने टेराकोटा नक्काशियों के लिए मशहूर है।
1655 ई० में मल्ल राजा रघुनाथ सिंह ने इस मंदिर का निर्माण बंगाली शैली में कराया था । इस मंदिर की दीवारों पर की गई नक्काशी आपको चकित कर देंगी। ये नक्काशी रामायण, महाभारत और कई अन्य पौराणिक कथाओ से सम्बंधित दृश्यों पर आधारित है।
ये टेराकोटा मंदिर ग्रामीण झोपड़ियों जैसा दिखता है। इसमें छला वास्तुकला की झलक दिखती है। बंगाली में छला का मतलब छल होता है। पहले मंदिर को कृष्ण राय के के नाम से जाना जाता था लेकिन डिज़ाइन के कारण लोग इसे जोरबांग्ला हैं।

मदनमोहन मंदिर:- 1624 ई० में राजा दुर्जन सिंह देव द्वारा एकरत्न शैली से निर्मित दीवारों पर उत्कृष्ठ वित्तीचित्र, रामायण और महाभारत की कहानियां दर्शाती हुई विष्णुपुर के सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है मदनमोहन मंदिर। ये मंदिर रत्न यानी एक स्तम्भ पर टिका हुआ है। मंदिर की दीवारों पर रामायण, महाभारत और अन्य पौराणिक कथाओं का वर्णन किया गया है।

मदनगपोल मंदिर:-
मल्लेश्वरम मन्दिर
मृण्मयी मन्दिर
नन्दलाल मन्दिर
राधागोविन्द मन्दिर
राधालालजी मन्दिर
राजामाधव मन्दिर
राधेश्याम मन्दिर

राधेश्याम मन्दिर:-
सरेश्वर मन्दिर
सर्वमंगल मन्दिर

श्यामराय मन्दिर:- (Panch Ratna Temple of Shyam Rai)राजा रघुनाथ सिंह द्वारा 1643 में निर्मित यह है विष्णुपुर के सबसे विशाल मंदिरों में से है, इसमें श्री कृष्ण के जीवन काल से संबंधित कहानियां अंकित हैं।

कला की सार्वभौम और सर्वकालिक सर्व सुलभ अभिव्यक्ति का माध्यम निसंदेह मृतिका रही है। कला की मृणमयी अभिव्यक्तियाँ खिलौनों में.,गृहस्थो के अन्नपात्र में सन्यासियों के भिक्षापात्र में, भक्तों की मूर्तियों में, लोक आस्था के पिण्डो में और घरों-प्रासादों मंदिरों के अलंकरण में होती रही है।

बंगाल अपनी मृण्मयी अभिव्यक्तियों के लिए गुप्त काल से लेकर आज तक भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी विशेष पहचान रखता है मध्यकाल में यह कला सौंदर्य और वैभव की दृष्टि से अपने चरम पर थी। बंगाल में पत्थर के स्रोत कम थे और यातायात साधन भी बहुत विकसित नहीं थे लेकिन इन सीमाओं के बावजूद बंगाल राजकीय, धार्मिक और व्यापारिक महत्वाकांक्षाओं का केंद्र भी बना रहा। दक्षिण पूर्व अतिरिक्त तुर्कों, अफ़ग़ानों और मुगलों की प्रतिस्पर्धा भी बंगभूमि में बहुत हुई। बंगाल सूफी सिलसिलों की प्रयोगशाला भी बना और संगठित रूप में विभिन्न यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का समय एवं आर्थिक दबाव भी भारत में बंगाल पर ही सबसे पहले पड़ा इनके अतिरिक्त आंतरिक रूप से बौद्ध शाक्त, शैव, वैष्णव आदि मतों के बलाबल में भी लगभग 1000 वर्ष का समय बीता इन सभी महत्वकांक्षाओं की कलात्मक अभिव्यक्तियों की बौद्ध विहारों, मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों, मजारों, कंपनियों की फैक्ट्रियों, महलों और राजप्रासादों में हुई। इन सब कलात्मक अभिव्यक्तियो में धर्म, संस्कृति, वास्तु-शिल्प आदि की तमाम विभिन्नताओं और व्यायतों के बावजूद एक रंग सब में सामान्य था - टेराकोटा का।

बंगाल में टेराकोटा से अलंकृत धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष संरचनाओं के कई केंद्र हुए, पर इनमें से अधिकांश प्राकृतिक आपदाओं, सांप्रदायिक उन्मादों और सामान्य काल प्रभाव में लुप्त हो गए। इनमें से एक विष्णुपुर अपनी सर्वोत्तम विशेषताओं के साथ आज भी बंगाल की समृद्ध मृण्मयी अभिव्यक्तियों की समृद्ध एवं जीवंत गाथा बनकर खड़ा है। पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले में स्थित विष्णुपुर टेराकोटा से निर्मित अपने अलंकृत वैष्णव मंदिरों के लिए विश्व के कला-मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

विष्णुपुर मल्ल राजाओं की राजधानी थी - वैसे तो बंगाल के मल्लों का इतिहास सातवीं सदी में उस समय से आरंभ होता है जब प्रद्युम्नपुर में आदिमहल रघुनाथ नें 695 ई० में मल्ल वंश की स्थापना की थी। जगतमल्ल नें राजधानी प्रद्युम्नपुर से विष्णुपुर में 994 ई० में स्थानांतरित की। मल्ल अपनी क्रूरता के लिए ही इतिहास में अधिक प्रसिद्ध रहे हैं पर उनकी पहचान बदली वीर हरवीर के समय में, जिसने 1565 ई० में 1620 ई० तक मल्ल भूमि पर शासन किया।

इस नई पहचान का अर्थ बंगाल के राजनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ के साथ अधिक स्पष्ट होगा। तेरहवीं सदी की शुरुआत बंगाल पर तुर्कों के आक्रमण से हुई, जिसमें परवर्ती सेन बुरी तरह पराजित हुए और बंगाल में मुस्लिम शासन स्थापित हो गया। राजकाल का स्वरूप बदलने के साथ-साथ कला, धर्म और संस्कृति के एक नए स्वरूप से भी बंगाल का परिचय हुआ। चिश्ती सिलसिले के सूफियों ने विभिन्न सुल्तानों के संरक्षण में बंगाली समाज की धार्मिक गतिविधियों पर अच्छा नियंत्रण स्थापित कर लिया इस पूरे दौर में इस्लामी वास्तुकला का संगम स्थानीय हिंदू बौद्ध बांग्ला वास्तुकला से हुआ और भविष्य की बांग्ला वास्तुकला की रूपरेखा यहीं से तैयार हुई।

सोलवीं सदी में फिर बंगाल में कई परिवर्तन हुए। चैतन्य महाप्रभु(1486 1533 ई०) के वैष्णव आंदोलन ने पूरे बंगाल में न सिर्फ हिंदुओं को आंदोलित किया, अपितु एक धर्म सहिष्णु समाज की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैष्णव आंदोलन के प्रभाव से बंगाल के अंदरूनी हिस्से से छोटे-छोटे हिंदू राजाओं, जमीदारों, धनाढ्य व्यापारियों और ग्राम सभाओं ने मूर्तियों और मंदिरों का निर्माण फिर से आरंभ किया।

इसी बीच दिल्ली पर मुगलों का शासन स्थापित हो गया था और 1578 ई० में बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर भी मुगलों का पूर्ण नियंत्रण हो गया। बंगाल के हिंदू सामान्तो, जमीदारों एवं आम लोगों की भावनाओं को समझते हुए अकबर ने बंगाल के पहले दो गवर्नर के रूप में राजा टोडरमल एवं राजा मानसिंह को नियुक्त किया।

राजा मानसिंह स्वयं बड़ा कृष्ण भक्त था और बंगाल के वैष्णव आंदोलन से इतना प्रभावित हुआ कि उसने बंगाल के वैष्णव भक्तों को वृंदावन ले जाकर वहां वैष्णवमत का पुनरुद्धार किया। लगभग इसी समय विष्णुपुर के मल्ल राजा और राजा वीर हरवीर का संपर्क चेतन के अनुयायी श्रीनिवास से हुआ। वीर हरवीर इतना प्रभावित हुआ कि न सिर्फ उसका व्यक्तिगत स्वभाव परिवर्तित हुआ, अपितु वह सपरिवार वैष्णवमत में दीक्षित हो गया। अब से मदनमोहन मल्ल वासियों के इष्ट देवता हो गए और यहीं से विष्णुपुर के टेराकोटा मंदिरों की विकास यात्रा भी शुरू हुई। वीर हरवीर ने चैतन्य महाप्रभु की स्तुति में रचनाएं भी की।

हरबीर ने विष्णुपुर में सोलवीं सदी के अंत में पिरामिडनुमा विशाल संरचना रासमंच का निर्माण करवाया, जिसमें कार्तिक पूर्णिमा के दिन विष्णुपुर के आसपास के सभी मंदिरों की मूर्तियां लाई जाती थी और उनकी सामूहिक पूजा की जाती थी। यह संरचना एक लेटराइट पत्थर, जिसे बांग्ला में फूल पत्थर कहते हैं से बनी वर्गाकार वेदी पर ईंटों से बनी हुई है। विष्णुपुर के सभी मंदिरों में ईंटों या फूल पत्थरों का ही प्रयोग हुआ है। यह रासमंच बंगाल के वास्तु अवशेषों में अपने आप में उदाहरण है।

लगभग 200 वर्षों तक यह विष्णुपुर की सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बना रहा। इसमें विषय के अनुरूप नर्तकियों एवं संगीतकारों की सुंदर आकृतियां टेराकोटा फलकों पर सुसज्जित है।

मूर्ति भंजन की आशंकाओं में मूर्तियां ग्रामीण क्षेत्रों में बिना किसी पक्की संरचना के फूस की झोपड़ी में स्थापित कर दी गई थी। धीरे-धीरे इन फूस की झोपड़ियों में ही मिट्टी के लेप से भित्तियों पर टेराकोटा की अलंकृत फलक सजने लगे। कालांतर में मंदिरों का यही स्वरूप सब को भाने लगा। आगे चाहे मंदिर ईंटो के बने या फूल पत्थरों के, अधिकांश की संरचना उसी झोपड़ी की तरह रही।

इससे भारतीय मंदिर निर्माण कला की एक नई शैली चाला प्रारंभ हुई। फूस की झोपड़ी की ढालू छतों बांग्ला में चाला कहा जाता है। बंगाल की इस नई मंदिर स्थापत्य शैली में इसी चाला शैली की छतें बनी। अधिकांश मंदिरों में चारों दिशाओं में ऐसी ढालू छते होती थी, जिसे चारचाला कहा जाता है। कुछ मंदिरों में ऐसी छते दो मंजिलों या परतों में भी मिलती है, जिसे आठचाला और कुछ में तीन परतों में 'बाराचाला' कहा जाता है। अपवाद स्वरूप कुछ संरचनाओं में बस दो तरफ ऐसी ढालू छते मिलती हैं, जिसे दोचाला या बांग्ला शैली भी कहते हैं। जब ऐसी दो संरचनाएं साथ-साथ जोड़कर बनाई जाती है तो उसे ज़ोर बांग्ला कहते हैं।

इस नई मंदिर निर्माण शैली में नई तरह की छतों के साथ अलंकृत शिखरों का भी प्रयोग हुआ, जिसे रत्न कहा जाता है। इन रत्नों की संख्या के आधार पर सभी मंदिरों का वर्गीकरण हुआ। विष्णुपुर के अधिकांश मंदिर एक रत्न ही है, पर यहां पंचरत्न की सर्वश्रेष्ठ रचना और नौरत्न मंदिर भी मौजूद है। वैसे बंगाल में वर्धमान के कलना में 25 रत्नों का भी एक कृष्ण चंद्र मंदिर निर्मित हुआ।

विष्णुपुर के लगभग सभी मंदिर वर्गाकार है, बल्कि अधिकांश मध्यकालीन बांग्ला मंदिर एवं मस्जिदें भी वर्गाकार ही है। इसकी प्रेरणा बंगाल की बौद्ध महाविहारों एवं स्तूपो की तरह एक ऊंची वर्गाकार वेदिका पर ही विष्णुपुर के अधिकांश मंदिर निर्मित है। यहां के मंदिरों में इस्लामी स्थापत्य के प्रभाव से नुकीली मेहराजो का भी प्रयोग हुआ। अधिकांश मंदिरों में सामने के प्रवेश द्वार में ऐसी तीन मेहराजो का प्रयोग मिलता है। इस्लामी प्रभाव से बंगाल के इन टेराकोटा मंदिरों में ज्यामितीय संरचनाओं, जातियों ,वल्लारियो और कड़ियों का भी प्रवेश हुआ।

पूर्वी राज्य भारत में अधिकांश मंदिर, जो किसी नदी के किनारे नहीं बने हैं वह तालाब के किनारे बने हैं। तालाब खुदवाना राजकीय दृष्टि से लोक कल्याण का और धार्मिक दृष्टि से पुण्य का काम था। अक्सर तालाब खुदवाने वाले से यह अपेक्षा भी होती थी कि वह उनका तालाबों के किनारे मंदिरों का भी निर्माण करवाएं, बल्कि तालाबों का प्रयोग मंदिरों में मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा और कीर्तन आदि के आयोजन के बाद ही होता था। विष्णुपुर में भी सभी मंदिर किसी ना किसी तालाब के पास बने हैं। इन तालाबों को यहां बांध कहा जाता है। चूंकि यह मल्ल राजाओं द्वारा बनाए गए थे इसलिए उनका आकार काफी बड़ा है। इन बांधों का महत्व विष्णुपुर की सामरिक योजना में भी था।

विष्णुपुर की मंदिर निर्माण कला में स्थापत्य, अलंकरण एवं योजना के साथ-साथ इन मंदिर के सक्षम कलाकारों एवं स्थापत्य कारों की भी अपनी परंपरा रही है। पूर्वी भारत में हाल तक मंदिर बनाने वाले एवं तालाब खोदने वाले धूर्मठ कारीगरो का एक विशिष्ट संघ या समूह होता था, जो गांव-गांव में घूमकर इस तरह की योजनाओं को बनवाने वाले की अपेक्षा के अनुसार कार्य करते थे। यह इन संघो की हिंदुओं की विशेषज्ञता ही थी कि पूरे बंगाल की मध्यकालीन संरचनाओं में एक समान वास्तुयोजना से लेकर अलंकरण तक दिखाई देता है। जहां कलाकार स्वयं नहीं पहुंचा, वहां उसकी कलाकृति के सांचे पहुंच गए। उन सांचों की यात्रा आज तक चल रही है। चाहे पश्चिम बंगाल में विष्णुपुर के वैष्णव मंदिर हो, मुर्शीदाबाद एवं वीरभूम के शैव मंदिर हों, बांग्लादेश के पहाड़पुर के विशालकाय

सोमबिहार बोध संरचना का पारवर्ती टेराकोटा अलंकरण हो या दीनाजपुर का कांतानी मंदिर सबमें बंगाल की सर्वमान्य शैली की छाप दिखाई देती है। इन कलाकारों में बंगाल के वास्तुशिल्प एवं अलंकरण के प्रयत्नों के प्रति सचेष्टता भी बहुत थी।

उदाहरण के तौर पर इस्लामी कला शिल्प से पूरी तरह विज्ञ होकर भी उन्होंने अन्य जीवो तत्वों का समाहार तो अपनी निर्माण कला में किया, पर चमकीले टाइलों का प्रयोग जो इस्लामी संरचनाओं में आम था, मंदिर निर्माण में नहीं किया।

बौद्ध प्रभाव से विष्णुपुर के मंदिरों में सड़कों के भी बेहतरीन नमूने मिलते हैं। इनमें से अधिकांश रखरखाव के अभाव में क्षतिग्रस्त हो गए हैं, पर जितने भी शेष है, उनका कलात्मक सौंदर्य देखते ही बनता है। टेराकोटा एवं स्टंको का प्रयोग संगम बंगाल के बाहर कम देखने को मिलता है।

इस्लाम के बंगाल आगमन से यहां के कलाकारों ने बहुत सी नई बातें सीखी, पर साथ ही उनकी कला पर कुछ समय तक कई वर्जनाएं आरोपित रही, मुगलों के आने के बाद जब यह वर्जना शिथिल हुई, तब उन कलाकारों ने अपने सोए हुए भावों को पूरी तरह जगाया और मूर्तियों के साथ-साथ अन्य मानवीय संरचनाओं में लगभग प्राण संचार कर दिया। दमन एवं गोपन के बाद मुक्ताकांश के प्रेम का जो उच्च वास होता है वही उच्छवास से विष्णुपुर एवं बंगाल के अन्य समकालीन मंदिरों में दिखाई देता है।

इस परिवेश की पहली अभिव्यक्ति विष्णुपुर के भव्य पंचरत्न श्यामराम मंदिर में हुई। यह विष्णुपुर के वैष्णव समूह मंदिरों में सबसे प्राचीन है। इसका निर्माण 1643 ई० में वीर हरबीर के उत्तराधिकारी रघुनाथ सिंह ने करवाया था। पूरी तरह ईंटों से निर्मित राधाकृष्ण को समर्पित यह मंदिर बंगाल के मध्य कालीन मंदिरों में सबसे लोकप्रिय है। इसकी निर्माण शैली और इसका निष्कर्ष सौंदर्य से आलोकित टेराकोटा फलकों का अलंकरण इसे अपनी शैली का सर्वश्रेष्ठ मंदिर बना देता है। इस मंदिर की बाहरी और अंदरूनी दोनों तरफ की दीवारों पर अलंकरण है। ऐसा उदाहरण विष्णुपुर में दूसरा नहीं दिखाई देता है।

इसके पंचरत्न में बीच का अष्टकोणीय रत्न भी अपने आकार एवं अलंकरण की दृष्टि से अद्भुत है। विष्णुपुर के अन्य मंदिरों की तरह इस मंदिर में भी रामायण, महाभारत, कृष्णलीला के साथ-साथ समकालीन, सामाजिक, आर्थिक, सामरिक एवं आम जनजीवन के चित्र भी सुंदर रूपों में उभरे हुए हैं। इस मंदिरों की दीवार पर टेराकोटा फलकों पर चौकोर अलंकृत फलकों पर उत्कीर्ण वृत्ताकार रासमंडल और उस रासमंडल के चारों तरफ चौकोर अलंकृत पलकों की योजना लोगों को विस्मित कर देती है।

वैसे तो यह रासमंडल अन्य मंदिरों में भी फलकों पर चित्रित है, पर एक तो वे रासमंडल अन्य मंदिरों में भी फलकों पर चित्रित हैं, पर एक तो वे आकार में इससे बहुत छोटे हैं, दूसरे इतना सुंदर अंकन और किसी में नहीं मिलता। बलूचारी साड़ियों के विष्णुपुर संस्करण में इस मंदिर के फलकों के अलंकरण, रासमंडल आदि की प्रेरणा सबसे महत्वपूर्ण रही है। इन साड़ियों में मुख्यत: विष्णुपुर के वैष्णव मंदिरों के अलंकरण का ही प्रयोग हुआ है।

इन विषयों के साथ-साथ चैतन्य महाप्रभु के प्रभाव से पुनर्जीवित वैष्णव मत की नई पहचान संकीर्तन मंडली के चित्र श्याम राज मंदिर के साथ-साथ विष्णुपुर के सभी वैष्णव मंदिरों में प्रमुखता से टेराकोटा फलकों पर उतारे गए हैं। इनमें करताल बजाने वाले, मृदंग बजाने वाले एवं भावविभोर होकर वैजयंती फूल की माला पहने हुए नाचने वालों के चित्र सर्वत्र मिलते हैं। मंदिरों में ये दृश्य यहां के लोक जीवन का अंग भी हो गए थे। विष्णुपुर एवं बंगाल के अन्य मंदिरों में चैतन्य महाप्रभु की और कुछ में उनके दो प्रमुख शिष्य अद्वैताचार्य एवं नित्यानंद की भी मूर्तियां स्थापित हुई।

विष्णुपुर में श्याम राय मंदिर के अलावा पंचरत्न शैली का एक और मंदिर 1665 ई० में वीर सिंह द्वितीय की पत्नी ने बनवाया था, जिसे मदन गोपाल मंदिर कहा जाता है। यह मंदिर विशाल है लेकिन विष्णुपुर के मंदिर जिस अलंकरण के लिए जाने जाते हैं वह अलंकरण इस मंदिर में नहीं है। विष्णुपुर में अन्य लगभग 30 मध्यकालीन वैष्णव मंदिर है जिनमें से 20 मंदिर ही संरक्षित है। कई मंदिर आज विष्णुपुर के गांवों में घरों के बीच उपेक्षित स्थिति में हैं। संरक्षित मंदिर में 12 मंदिर एक रत्न शैली के हैं। इन मंदिरों में सबसे प्राचीन काला चांद मंदिर है जो फूल पत्थर से बना हुआ है, जिसका निर्माण रघुनाथ सिंह ने 1656 ई० में करवाया था।

एक रतन शैली का विष्णुपुर का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है मदन मोहन मंदिर। यह मल्लों के इष्ट देवता मदन मोहन का मंदिर है। विष्णुपुर के समस्त वैष्णव मंदिरों में से आज बस इसी में पूजा होती है। यद्यपि वर्तमान में इस मंदिर में स्थित मदन मोहन की मूर्ति वह नहीं है, जिसे मल्ल राजाओं ने स्थापित करवाया था। इस मंदिर का निर्माण दुर्जन सिंह ने 1694 ई० में करवाया था। ईटों से बने इस मंदिर का स्थापत्य एवं अलंकरण भी अद्भुत है।

जोर बांग्ला शैली में एक रत्न मंदिर का सर्वोत्तम उदाहरण है केस्टो राय मंदिर। इसका निर्माण भी रघुनाथ सिंह ने ही 1655 ई० में करवाया था। इसमें एक वर्गाकार वेदीका पर दो बांग्ला संरचनाओं को मिलाकर बीच में रत्न की शिखर रूप में स्थापना हुई है। इस मंदिर में चैतन्य महाप्रभु की 6 भुजाओं वाली मूर्ति है। कैस्टोराय मंदिर के अलंकरण की शैली विष्णुपुर के अन्य मंदिरों से भिन्न है। इसके भित्ति पर वर्गाकार टेराकोटा फलकों की सामान्य सी दिखने वाली व्यवस्था भी अद्भुत सौंदर्य उत्पन्न करती है। इस शैली में चैतन्य महाप्रभु की प्रतिभा का एक और मंदिर 1735 ई० में गोपाल सिंह ने महाप्रभु मंदिर नाम से बनवाया था, परंतु वह बहुत जर्जर अवस्था में है।

विष्णुपुर के मल्ल राजाओं में सबसे बड़ा निर्माता वीर सिंह हुआ, जो 1656 ई० में गद्दी पर बैठा था। उसने विष्णुपुर में 8 बड़े बाँध (तालाब) बनवाये । इन बाँधो से न सिर्फ विष्णुपुर की सामाजिक सुरक्षा मजबूत हुई और जनता लिए जल स्त्रोत हुआ अपितु इन बाँधो के बन जाने से विष्णुपुर का प्राकृतिक सौंदर्य निखर गया और उन बांधो के बीच में टेराकोटा मंदिरों की अवस्थितियाँ और भी भव्य हो गयी। उसने विष्णुपुर का क़िला भी बनवाया। इसके अतिरिक्त विष्णुपुर के एक तिहाई मंदिर भी उसी में बने। उन सब में सबसे भव्य मंदिर है लालजी मंदिर जो फूल पत्थरो था।

एक रत्न शैली की ही मंदिर राधामाधव मंदिर के प्रांगण में दोचाला भोगमण्डप मिला है। विष्णुपुर के किसी अन्य मंदिर में ऐसी कोई दूसरी संरचना नहीं मिलती। यद्यपि इस बात की पूरी सम्भावना है की इस शैली के भोगमण्डप की अवधारणा अन्य मंदिरों में भी मूलत: रही होगी।

का निर्माण मल्ल राजा गोपाल सिंह के समय 1737 ई० में हुआ। इसके अतिरिक्त इस राजा के समय में 5 और मंदिरों का निर्माण हुआ। इस दृष्टि से गोपाल सिंह का स्थान वीर सिंह के बाद दूसरा ही है।

विष्णुपुर में 2 आठचाला मंदिर भी है- राधा विनोद मंदिर और राधारमण मंदिर। इनमें 1659 ई० में रघुनाथ सिंह की पत्नी द्वारा निर्मित पहला मंदिर अपने अलंकरण के लिए उल्लेखनीय है, पर दूसरे में कलात्मक सौंदर्य का अभाव ही है। मल्ल राजाओं द्वारा विष्णुपुर में बनवाया गया सबसे अंतिम प्राप्य मंदिर है एकरत्न शैली का राधाश्याम मंदिर। इसका निर्माण 1758 ई० में चैतन्य सिंह ने करवाया था। यह एक विशाल मंदिर है और एक चहारदीवारी के अंदर है यह मंदिर अनंत शाहीन विष्णु की प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। कालांतर में जब विष्णुपुर के राजाओं का प्रभुत्व जाता रहा, तब इस मंदिर में ही सभी मंदिरों से मूर्तियां लाकर रख दी गई और एक स्थान पर ही सब की पूजा होने लगी।

विष्णुपुर में नवरत्न शैली का एकमात्र मंदिर है श्रीधर और यह उस समय का एकमात्र मंदिर है, जिसका निर्माण मल्ल ने नहीं, बल्कि एक धनाढ्य बसु ने करवाया था। इस मंदिर में यूरोपीय वेशभूषा एवं बंदूकधारियों के टेराकोटा फलक मिलते हैं।

ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के बाद भू-राजस्व का निर्धारण अव्यवहारिक ढंग से होने लगा और अपनी शक्ति कमजोर हो जाने के कारण विष्णुपुर के मल्ल राजा पर भू-राजस्व का बकाया बहुत बढ़ गया। बंगाल के इस नये स्वयंभू शासन ने 1805 में विष्णुपुर की रियासत को नीलाम कर दिया जिसे वर्धमान के जमीदार ने खरीद लिया। विष्णुपुर की मृण मूर्तियां और मृण मंदिर अपने संरक्षकों की बाट जोड़ते जीर्ण होने लगा। मंदिरों की घंटियाँ शांत हो गई, कीर्तन मंडलियाँ अब विलुप्त होने लगी। विष्णुपुर के बांधों में जलकुंभीयों और कांस की घांसो का उपनिवेश हो गया।

विष्णुपुर का वैभव जाता रहा परंतु विष्णुपुर के परित्यक्त वैभव टेराकोटा मंदिर आज भी अपनी श्रेणी में अद्वितीय है। इन मंदिरों के छोटे-छोटे बड़े असंख्य टेराकोटा पलकों पर न जाने कितनी अकादमिक शोध की संभावनाएं हैं। उन फलकों पर न जाने कितनी फलकों

में न जाने फैशन के कितने सैंपल और सिंबल है जिनका प्रयोग डिजाइनर कंपनियां बिना कोई पेटेंट शुक्ल दिए कर रही है और आगे भी कर सकती है। इन टेराकोटा फलकों में एक नाद है, जो विष्णुपुर की ध्रुपद संगीत परंपरा को भी परिपुष्ट करती रही है।

इन फलकों में कलाकार का वह संभव है, जो उसे वहां दृश्यमान कला के अवसर रूप में मिलता है।

विष्णुपुर के मंदिर की संरचना एवं उसके टेराकोटा फलकों के अलंकरण का सौंदर्य वर्णन से बहुत ही स्पष्ट नहीं हो सकता। भारत की मृण्मयी अभिव्यक्तियां की समृद्ध परंपरा को वहां जाकर अनुभूत करने का आनंद कुछ और ही है।

Reference 1 :- विष्णुपुर का शाब्दिक अर्थ है विष्णु की भूमि। लेकिन यहां आने वाले बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि टेराकोटा और पक्की मिट्टी के बने मंदिर के लिए प्रसिद्ध ये शहर वृंदावन से प्रेरित होकर बनवाया था जहां विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण का बचपन बीता था। कोलकाता से 138 किलोमीटर दूर विष्णुपुर, मल्ल राजवंश की राजधानी हुआ करता था। 17वीं - 18वीं शताब्दी में मल्ल साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर था। इसी युग में यहां ज्यादातर मंदिरों का निर्माण हुआ था। ये मंदिर समृद्धि और वैभव के प्रतीक थे और कलाकारों और शिल्पियों के लिए प्रेरणा हुआ करते थे।

विष्णुपुर कब बसा, इसे लेकर इतिहास में हालांकि कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है लेकिन जो हम जानते हैं वो यह है कि सातवीं शताब्दी के आरंभ में यह मल्ल साम्राज्य का प्रमुख हिस्सा हुआ करता था। इनका साम्राज्य पश्चिम बंगाल में बंकुरा, वर्धमान, मदनीपूरा और मुर्शिदाबाद के कुछ हिस्सों से लेकर बिहार के छोटा नागपुर तक फैला हुआ था। उनकी पहली राजधानी दक्षिण बंकुरा में जायपुर के पास हुआ करती थी लेकिन 16वीं शताब्दी के आसपास उन्होंने विष्णुपुर को अपनी राजधानी बना लिया। साम्राज्य के विस्तार के बाद मल्ल शासकों ने कला की तरफ ध्यान देना शुरू किया। वे कला और धर्म के बड़े संरक्षक थे, उन्होंने 10वीं और 18वीं शताब्दी में टेराकोटा के मंदिर बनवाए जिन पर बहुत सुंदर नक्काशी हैं। इन मंदिरों पर दरअसल उस प्रांत का इतिहास लिखा हुआ है।

2 प्राचीन मृण्मयी मंदिर

अभय पाठा मलिक ने अपनी किताब "हिस्ट्री ऑफ विष्णुपुर राज इन इंसेंट किंगडम इन बंगाल" मैं लिखा है कि विष्णुपुर में मृण्मयी मंदिर के पहले दो अन्य मंदिर होते थे। 9वीं शताब्दी में पृथ्वी मल्ल ने चंदेश्वर मंदिर और 10वीं शताब्दी में पतिता मल्ल ने जगन्नाथ का मंदिर बनवाया था लेकिन अब यह मंदिर अस्तित्व में नहीं है। इस तरह से मृण्मयी मंदिर सबसे प्राचीन मंदिर है।

विष्णुपुर के अन्य मंदिर 16वीं-17वीं शताब्दी के दौरान बनने शुरू हुए थे। उस अवधि में मल्ल राजवंश के 49वें शासक हरबीर मल्लदेव जिसे वीर हरवीर भी कहा जाता है, के शासन काल में विष्णुपुर समृद्ध होने लगा था और अपने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश की वजह से पड़ोसी का ध्यान आकृष्ट करने लगा था। अकबर के समकालीन वीर हरबीर को विष्णुपुर और मल्ल राजवंश के सबसे महानतम शासकों में गिना जाता है। वीर हरवीर सिंह के शासन काल में कला, कलाकार, संगीतकार, विद्वान् और पवित्र लोग बहुत फलते फूलते थे। कहा जाता है कि वही विष्णुपुर में वैष्णव धर्म को लेकर आए थे। एक कथा के अनुसार वीर हरवीर सिंह एक बार वृंदावन की तीर्थ यात्रा पर गए थे। 16वी शताब्दी में वैष्णव की गौंडीय परंपरा की स्थापना करने वाले श्री चैतन्य के अनुयायियों की वजह से वृन्दावन का गौरव फिर वापस आ चुका था। वीर हरवीर वृंदावन को देखकर इतना प्रभावित हुआ कि उसने इसी तरह के मंदिर विष्णुपुर में भी बनवाने का फैसला कर लिया।

3. विष्णुपुर पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से कोई 200 किलोमीटर इसके पश्चिम में पूरुलिया, दक्षिण में मोतीपुर एवं पूर्वोत्तर में हुगली एवं वर्धमान जिले स्थित है। छोटा नागपुर पठार की पूर्वी श्रेणी यहां फैली है। यहां की प्रमुख नदी दामोदर उत्तरी सीमा बनाती है। निम्न वार्षिक ताप लगभग 27 डिग्री से तथा वार्षिक वर्षा का औसत 56 इंच रहता है। पूर्व में जलोढ़ मिट्टी होने से भूमि अधिक उपजाऊ है। धान मुख्य फसल की अतिरिक्त ईख, मक्का, तिलहन, दलहन, गेहूं, पाठ, कपास आदि पैदा किए जाते हैं। रेशम काटना, रेशमी एवं सूती कपड़े बुनना, ताम्बे का काम एवं लाख के उद्योग प्रमुख है।

4. यहां के प्रमुख नगर बांकुड़ा, विष्णुपुर, बिरसिंहपुर, बरजोरा, राजग्राम, सोनामुखी आदि है।

5. बांकुड़ा नगर जिले के बाल किशोर नदी में उत्तरी किनारे में बसा है। कहा जाता है कि इसी का नाम यहां के प्राचीन निवासी बंकू राय के नाम पर पडा है "ग्रैंड ट्रंक मार्ग" पर स्थित है।